Capacity-Building Initiatives by ICAR-DCFR to Promote Sustainable Rainbow Trout Farming in Sikkim

The ICAR-Directorate of Coldwater Fisheries Research (ICAR-DCFR) as part of its capacitybuilding efforts in the Northeast Region, is conducting training programmes for extension officials and fish farmers of Sikkim for rainbow trout farming. A total of 120 nominated participants, representing all six districts of Sikkim would complete the training in six groups. Four batches from the Soreng and Pakyong districts have already completed the training successfully. These training sessions, which are being conducted at the ICAR-DCFR Field Centre, Champawat and headquarter Bhimtal, are designed to improve the knowledge and skills of the Extension Officials of the line department and fish farmers of Sikkim. The programme covers a range of topics, including techniques for large-scale trout breeding, hatchery and nursery management, post-stripping brooder care, efficient cost-effective feeding methods, health management, value addition, and marketing strategies. Each five-day course comprises 10 theoretical sessions and 15 practical modules and also includes climate-resilient farming techniques, such as Recirculatory Aquaculture Systems (RAS) for both seed production and table-size fish production. Considering the rapid expansion of rainbow trout farming in Sikkim and the paramount importance of access to quality seed, there is an urgent need for skilled personnel to manage the farm to ensure both profitability and sustainability. These programmes are being organized as per the demand of the Department of Fisheries, Government of Sikkim.

In the opening session, Director Dr. Pramod Kumar Pandey appealed trainees to utilize this opportunity for improving their skills and expertise and informed that the Government of India and ICAR are promoting fish farming in the northeast through a number of schemes and incentives. He conveyed his appreciation to Ms.Roshni Rai, Secretary, Sikkim State Fisheries Department and Director Shri K.K.Shrestha for promptly nominating participants and hoped that these skill development learning would greatly enhance their farm management abilities and would contribute in bringing prosperity among the farmers of Sikkim state, where demand and market value for rainbow trout is very high. The training programmes are being coordinated and organized by scientists Dr. Suresh Chandra, Dr. S.K. Mallik, Dr. Kishore Kunal, and Dr. Garima from the Directorate.



उत्तर उजाला

सिक्किम में रेनबो ट्राउट खेती को बढ़ावा देने के लिए भीमताल में मत्स्य अधिकारी व कृषकों का प्रशिक्षण शुरू

Ì f अनुसंधान मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय संवर्धन और विपणन रणनीतियों Ŧ भीमताल में सिक्किम राज्य के 5 T रेनबो ट्राउट मत्स्य पालकों में किया गया है। निदेशक डॉ. क्षमता विकास करने के लिए Ŧ Ť मत्स्य विस्तार अधिकारियों व कुषकों का 5

İ Ŧ र

प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित Π किया गया। राज्य मत्स्य विभाग Ŧ रे से चयनित सभी 6 जिलों का प्रतिनिधित्व करने वाले 120 1 Ì प्रतिभागियों को छह समूहों में यह Ì प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इनमें मे से सोरेंग और पक्योंग जिलों के Ŧ चार समूहों ने यह प्रशिक्षण f सफलता पूर्वक प्राप्त कर लिया है। यह प्रशिक्षण सत्र सिक्किम के 5 विस्तार अधिकारियों और मत्स्य Т कृषकों के ज्ञान और कौशल को Ŧ बढाने के लिए डिजाइन किए गए ₹ हैं और इन्हें चंपावत फील्ड सेंटर 5 और भीमताल में आयोजित Ţ किया जा रहा है। इसमें बड़े 2 पैमाने पर ट्राउट प्रजनन तकनीक, र ť हैचरी और नर्सरी प्रबंधन, पोस्ट मल्लिक, डॉ. किशोर कुणाल और स्ट्रिपंग ब्रूतर देखभाल, प्रभावी

भीमताल। भारतीय कृषि और लागत संबंधी फीडिंग परिषद-शीतजल विधियों, स्वास्थ्य प्रबंधन, मूल्य सहित कई विषयों को सम्मिलित प्रमोद कुमार पाण्डेय ने प्रतिभागियों से अपने कौशल और विशेषज्ञता को बेहतर बनाने के लिए इस अवसर का उपयोग करने की अपील की। बताया भारत सरकार और आईसीएआर उत्तर-पूर्व क्षेत्र में मछली पालन को प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएं और प्रोत्साहन प्रदान कर रही है। सिक्किम राज्य मत्स्य सचिव रोशनी राय 7/10 शक केके श्रेष्ठा द्वारा प्रतिभागमा को शीघ्र नामित करने के लिए सराहना व्यक्त की। प्रधान वैज्ञानिक और उत्तर-पूर्व क्षेत्र के नोडल अधिकारी डॉ. सुरेश चंद्र ने कहा सिक्किम आने वाले वर्षों में रेनबो ट्राउट पालन में नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा। इस दौरान वैज्ञानिक डॉ. सुमंत कुमार डॉ. गरिमा आदि मौजूद रहे।